दिव्य कुम्भ – भव्य कुम्भ   गंगे तव दर्शनात् मुक्तिः

संस्कृति विभाग
उत्तर प्रदेश

कुम्भ मेला – 2019

उत्तर प्रदेश की विभिन्न विधाओं की संस्कारशाला

16 दिवसीय प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, लखनऊ (संस्कृति विभाग, उ०प्र०)
नवम् तल, जवाहर भवन, लखनऊ
Website : www.upculture.up.nic.in, E-mail : directorcultureup@gmail.com
Tel.: +91 522 2286672

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

कुम्भ मेला - 2019 : उत्तर प्रदेश की विभिन्न विधाओं की संस्कारशाला
दिनांक : 15 से 30 दिसम्बर, 2018

16 दिवसीय प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला

क्र0	विधा	संस्था/कलाकार	समन्यवयक	विद्यालय का नाम
1	अवधी लोकगीत/लोक नृत्य	लोकरंग फाउण्डेशन लखनऊ 8756783333	श्री धनंजय शारवत 9793556345	शिव इण्टरमीडियट कालेज, कटहरा, हण्डिया, प्रयागराज
2	लोकगीत/लोक नृत्य	श्री आशुतोष श्रीवास्तव, प्रयागराज 9415368086, 7505546040	श्री सोमनाथ बरन 7355224185 9454255943	के0पी0 इण्टर कालेज, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ।
3	राई सेरा	विजय बेला : एक कदम खुशियों की ओर-संस्था 8545011057	श्री अवधेश कुमार 9651873286	कमला स्मारक इण्टर कालेज, बलापुर, प्रयागराज
4	ब्रज के लोक गीत/लोक नृत्य	श्री सीमा मोरवाल, मथुरा 9837128970, 8218507510	श्री उमेश चन्द्र कुशवाहा 9415307620	गुरु तेग बहादुर खालसा इण्टरमीडिएट कालेज, खुल्लाबाद, प्रयागराज
5	नौटंकी	श्री रतीश मोहन, प्रयागराज 9792036340	श्री संतोष कुमार 7607609794	श्री संगम सिंह सिंगरौर इण्टर कालेज, कदीरपुर, प्रयागराज
6	कथक	सुश्री नीता जोशी, लखनऊ 7905555415	श्री राम लोचन विश्वकर्मा 8887918654	करमाईन देवी जूनियर हाईस्कूल, करमा, प्रयागराज
7	जादू	लोक संस्कृति शोध संस्थान, लखनऊ 8765919255	श्री वेदानन्द विश्वकर्मा 8887918654	लेट आर0 पी0 इण्टर कालेज, नैनी, प्रयागराज
8	ब्रज के लोक गीत/लोक नृत्य	श्री हरीश कुमार, मथुरा 9457382081 8218512226	सुश्री मनोरमा देवी 7007391819	बलापुर आदर्श बालिका विद्यालय, बलापुर, प्रयागराज

नोट :- 1. कार्यशाला में चयन हेतु स्नातक तक के छात्र/छात्रायें ऊपर दिये गये नम्बरों पर सम्पर्क कर सकते हैं।
2. संस्कृति विभाग के मोबाइल एप पर अपना पंजीकरण कराकर चयन हेतु दिनांक 15 दिसम्बर, 2018 को अपनी चयनित विधा में प्रशिक्षण हेतु सम्बन्धित विद्यालय में सीधे सम्पर्क कर सकते हैं।
3. कार्यशाला की समाप्ति के उपरान्त तैयार हुई प्रस्तुति को कुम्भ मेले में संस्कृति विभाग के सास्कृतिक पंडाल में किया जायेगा।

पंजीकरण हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

विधा – अवधी लोकगीत/लोक नृत्य

प्रशिक्षक

सुश्री कुसुम वर्मा, लोकरंग फाउंडेशन, लखनऊ

लोकगीत लोक के गीत हैं। जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा लोक समाज अपनाता है। सामान्यतः लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जा सकता है। लोकगीतों का रचनाकार अपने व्यक्तित्व को लोक समर्पित कर देता है। शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्य लोकव्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनन्द की तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज उद्‌भूत करता है, वही लोकगीत है। इस प्रकार लोकगीत शब्द का अर्थ है- लोक में प्रचलित गीत, लोक-रचित गीत, लोक-विषयक गीत। कजरी, सोहर, चौती, लंगुरिया आदि लोकगीतों की प्रसिद्ध शैलियाँ हैं।

विद्यालय

प्रधानाचार्य

शिव इण्टरमीडिएट कालेज, कटहरा, हण्डिया, प्रयागराज

विधा – अवधी/लोकगीत/लोक नृत्य

प्रस्तुति – 22 जनवरी, 2019

कुम्भ – 2019 प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

विधा – लोकगीत/लोक नृत्य

प्रशिक्षक

श्री आशुतोष श्रीवास्तव, प्रयागराज

भारत एक ऐसा देश है, जहां सभी अवसरों पर विभिन्न प्रकार के नृत्य किये जाते है. पुरे भारत देश में बहुत समय पहले से उत्सव और त्योहारों पर नृत्य करने की परम्परा चली आ रही हैं. साथ ही भारत के प्रत्येक राज्य के अपने कुछ लोक नृत्य है. लोक नृत्य प्रदेश की संस्कृति को बयां करते है. ऐसे नृत्य जो प्रान्त, धर्म , जाति या स्थान के आधार पर भिन्नता रखते है वे लोक नृत्य होते है. एक प्रदेश के एक से अधिक लोक नृत्य भी हो सकते है। जैसे – पंडवानी, गणगौर नृत्य, बिहू, नौटंकी, यक्षगान,भांगड़ा, गिद्दा, कालबेलिया, घुमर, तेरहताली, भवाई नृत्य, तमाशा, लावणी, कजरी, छौलिया, कूद दंडीनाच, रुऊफ, छपेली,दांगी, थाली, छऊ, विदेशिया, जाट- जतिन, कथकली, छोंग, कुचीपुडी, धुमरा,पंथी नृत्य इत्यादि।

विद्यालय

प्रधानाचार्य

के०पी० इण्टर कालेज, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज

विधा – लोकगीत/लोक नृत्य

प्रस्तुति – 11 जनवरी, 2019

कुम्भ – 2019 प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

विधा – राई सेरा

प्रशिक्षक

श्री चन्द्रा भाष विजय बेला : एक कदम खुशियों की ओर

राई-नृत्य-पूर्व में बेटे की शादी हो या घर में नए मेहमान का आगमन, व्यापार में लाभ हो या किसी बरसों पुरानी मन्नत का पूरा होना, इन सबकी की खुशियां बुंदेलखंड में बेड़नियों और उनके राई-नृत्य के बिना संभव नही थी। राई-नृत्य बुंदेलखंड के बहुचर्चित लोक नृत्य है, परन्तु आज यह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। एक जमाना था कि बिना राई-नृत्य के कोई भी शुभ कार्य पूर्ण नही होते थे। राई-नृत्य को राई क्यों कहते है जिस तरह से राई अगर कहीं गिर जाए तो वह एक स्थान पर नहीं ठहरती, उसी प्रकार इस नृत्य को करने वाली नृत्यंगना एक स्थान पर नही ठहरती। इस नृत्य में नृतकी घेरदार लहँगा (पूर्व में 72 गज) तथा चेहरे पर लम्बा घूँघट डालकर मोर की तरह नाचती है। इस नृत्य के साथ फागें गाई जाती हैं, तथा राई के गीत ख्याल, स्वांग आदि और भी हैं। राजा महाराज के शासनकाल में इसे राज दरबारी नृत्य का दर्जा प्राप्त था। राई की मुख्य विशेषता इसकी गति व देसी वाद्ययंत्रों (हारमोनियम, लंगड़ीया मंजीरा व झांझ आदि) का संगम है।

विद्यालय

प्रबन्धक

कमला स्मारक इण्टर कालेज, प्रयागराज

विधा – राई सैरा

प्रस्तुति – 12 जनवरी, 2019

कुम्भ – 2019 प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

विधा – ब्रज के लोकगीत/लोक नृत्य

प्रशिक्षक

सुश्री सीमा मोरवाल, मथुरा

ब्रजमंडल में गाए जाने वाले गीत भाषा और भाव की दृष्टि से अत्यंत सरस होते। जन्म के गीतों में सोभर (सोहर), ननद भावज, नेगा के गीत, छठी के गीत और जगमोहन लुगरा नामक गीत, विवाह के गीतों में सगाई, पीली चिट्ठी, लगुन, भात न्योतना, हरद हात, रतजगा, तेल, घूरा पूजन, अछूता, मढ़ावा गाड़ना, भात, ब्याह का दिन, भाँवर, बढ़ार गीत, पलकाचार, रहस बधावा, बदंनवार, मुँहमड़ई, विदा, वरगी वर के घर, बहू नचना, दर्द देवता के गीत, लग्न के गीत, भात के गीत, रतजगे के गीत, सतगढ़ा, लाड़ी, गारी, पलकाचार, खेल के गीत, पूरनमल और छद्म के गीत मुख्य हैं। त्यौहार, व्रत एंव देवी आदि के गीतों में देवीगीत, जाहर पीर, एकादशी का गीत, श्रावण गीत, कार्तिक के गीत, देवठान के गीत और होली उल्लेखनीय है।

विद्यालय

प्रधानाचार्य

गुरु तेग बहादुर खालसा इण्टरमीडिएट कालेज, खुल्लाबाद, प्रयागराज

विधा – ब्रज के लोकगीत/लोक नृत्य

प्रस्तुति – 27 जनवरी, 2019

कुम्भ – 2019 प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

विधा – नौटंकी/पाई डण्डा

प्रशिक्षक

श्री रतीश मोहन, प्रयागराज

नौटंकी उत्तर भारत के एक लोक नृत्य और नाटक शैली का नाम है। यह भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीनकाल से चली आ रही स्वांग परम्परा की वंशज है नौटंकी में पात्र आपस में बातें करते है लेकिन गहरी भावनाओं एवं संदेशों को अक्सर तुकबंदी के जरिये प्रकट करते है। नौटंकी और स्वांग में सबसे बड़ा अंतर यह माना जाता है कि जहाँ स्वांग ज्यादातर धार्मिक विषयों से ताल्लोक रखता है और उसे थोड़ी गंभीरता से प्रदर्शित किया जाता है वहाँ नौटंकी के मौजू प्रेम और वीर-रस पर आधारित होते हैं और उनमें व्यंग्य और तंज मिश्रित किये जाते हैं। पंजाब से शुरू होकर नौटंकी की शैली तेजी से लोकप्रीय होकर पूरे उत्तर भारत में फैल गई।

विद्यालय

प्रबन्धक

श्री संगम सिंह सिंगरौर इण्टर कालेज, कदीरपुर, प्रयागराज

विधा – नौटंकी/पाई डण्डा

प्रस्तुति – 23 जनवरी, 2019

कुम्भ – 2019 प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

विधा – कथक

प्रशिक्षक
सुश्री नीता जोशी, लखनऊ

कथक नृत्य उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य है। कथा कहे सो कत्थक कहलाए। कत्थक शब्द का अर्थ कथा को थिरकते हुए कहना है। प्राचीन काल में कत्थक को कुशी लव के नाम से जाना जाता था। कथक उत्तर भारत की नृत्य शैली है। यह बहुत प्राचीन शैली है ,क्योंकि महाभारत में भी कथक का वर्णन है मध्यकाल में इसका संबंध कृष्ण कथा और नृत्य से था। वर्तमान समय में बिरजू महाराज इसके बड़े विख्याता रहे हैं। हिंदी फिल्मों में अधिकांश नृत्य इसी शैली पर आधारित होते हैं भारत के 8 शास्त्रीय नृत्य में से सबसे पुराना कथक नृत्य है जिसकी उत्पत्ति उत्तर भारत में हुई कथक एक संस्कृत शब्द है। जिसका अर्थ कहानी से उत्पन्न करना है। यह नृत्य कहानियों को बोलने का साधन है। इस नृत्य के तीन प्रमुख घराने है कछवा के राजपूतों की राज्यसभा में जयपुर घराने का अवध के नवाब की राज्यसभा में लखनऊ घराने का और वाराणसी के सभा में बनारस घराने का जन्म हुआ। अपनी विशिष्ट रचनाओं के लिए एक कम प्रसिद्ध राय गढ़ घराना भी है।

विद्यालय

प्रबन्धक
करमाईन देवी जूनियर हाई स्कूल, लखनऊ

विधा – कथक

प्रस्तुति – 12 जनवरी, 2019

कुम्भ – 2019 प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

विधा – जादू

प्रशिक्षक

लोक संस्कृति शोध संस्थान, लखनऊ

जादू एक प्रदर्शन कला है जो हाथ की सफाई के मंचन द्वारा या विशुद्ध रूप से प्राकृतिक साधनों का उपयोग करते हुए प्रकटतः असंभव या अलौकिक, करतबों के भ्रम जाल की रचना द्वारा दर्शकों का मनोरंजन करती है। इन करतबों को जादुई हाथ की सफाई, प्रभाव या भ्रम जाल कहा जाता है। इसे अपसामान्य या आनुष्ठानिक जादू से विभेद करने के लिए अक्सर 'मंचीय जादू' कहा जाता है।
वह व्यक्ति जो ऐसे भ्रम जालों का प्रदर्शन करता है, जादूगर या ऐंद्रजालिक कहलाता है। कुछ कलाकारों को उनके द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले जादुई प्रभावों के प्रकार को प्रतिबिंबित करते नामों से भी पुकारा जाता है, जैसे मायावी, बाजीगर, परामनोवैज्ञानिक, या बच निकलनेवाला कलाकार।

विद्यालय

प्रधानाचार्य

लेट आर0पी0 इण्टर कालेज, नैनी, प्रयागराज

विधा – जादू

प्रस्तुति – 11 जनवरी, 2019

कुम्भ – 2019 प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

विधा – ब्रज के लोकगीत/लोक नृत्य

प्रशिक्षक
श्री हरीश माथुर, मथुरा

ब्रजमंडल में गाए जाने वाले गीत भाषा और भाव की दृष्टि से अत्यंत सरस होते। जन्म के गीतों में सोभर (सोहर), ननद भावज, नेगा के गीत, छठी के गीत और जगमोहन लुगरा नामक गीत, विवाह के गीतों में सगाई, पीली चिट्ठी, लगुन, भात न्योतना, हरद हात, रतजगा, तेल, घूरा पूजन, अछूता, मढ़ावा गाड़ना, भात, ब्याह का दिन, भाँवर, बढ़ार गीत, पलकाचार, रहस बधावा, बदंनवार, मुँहमड़ई, विदा, वरगी वर के घर, बहू नचना, दर्द देवता के गीत, लग्न के गीत, भात के गीत, रतजगे के गीत, सतगढ़ा, लाड़ी, गारी, पलकाचार, खेल के गीत, पूरनमल और छद्‌म के गीत मुख्य हैं। त्यौहार, व्रत एंव देवी आदि के गीतों में देवीगीत, जाहर पीर, एकादशी का गीत, श्रावण गीत, कार्तिक के गीत, देवठान के गीत और होली उल्लेखनीय है।

विद्यालय

प्रधानाचार्य
बलापुर आदर्श बालिका विद्यालय, बलापुर, प्रयागराज

विधा – ब्रज के लोकगीत/लोक नृत्य

प्रस्तुति – 12 जनवरी, 2019

कुम्भ – 2019 प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

कुम्भ मेला – 2019 : उत्तर प्रदेश की विभिन्न विधाओं की संस्कारशाला
दिनांक : 15 से 30 दिसम्बर, 2018

16 दिवसीय प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला

(स्थान – शिव इण्टरमीडिएट कालेज,कटहरा, हण्डिया, प्रयागराज)

लोकरंग फाउण्डेशन, लखनऊ (प्रशिक्षक)

प्रमाण पत्र

श्री/सुश्री ______________________

अवधी, लोक गीत, लोक नृत्य की कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

गौरव पाठक
प्रभारी
क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र
लखनऊ

अजय कुमार अग्रवाल
संयुक्त निदेशक
संस्कृति निदेशालय उ०प्र०
लखनऊ

शिशिर
विशेष सचिव एवं निदेशक
सूचना, संस्कृति, भाषा, उत्तर प्रदेश

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

कुम्भ मेला – 2019 : उत्तर प्रदेश की विभिन्न विधाओं की संस्कारशाला
दिनांक : 15 से 30 दिसम्बर, 2018

16 दिवसीय प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला

(स्थान – के०पी० इण्टर कालेज, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज)

श्री आशुतोष श्रीवास्तव, प्रयागराज (प्रशिक्षक)

प्रमाण पत्र

श्री/सुश्री ______________________

लोक गीत, लोक नृत्य की कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

गौरव पाठक
प्रभारी
क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र
लखनऊ

अजय कुमार अग्रवाल
संयुक्त निदेशक
संस्कृति निदेशालय उ०प्र०
लखनऊ

शिशिर
विशेष सचिव एवं निदेशक
सूचना, संस्कृति, भाषा, उत्तर प्रदेश

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

कुम्भ मेला – 2019 : उत्तर प्रदेश की विभिन्न विधाओं की संस्कारशाला
दिनांक : 15 से 30 दिसम्बर, 2018

16 दिवसीय प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला

(स्थान – कमला स्मारक इण्टर कालेज, बलापुर, प्रयागराज)

विजय वेला : एक कदम खुशियों की ओर (प्रशिक्षक)

प्रमाण पत्र

श्री/सुश्री ______________________

राई सेरा की कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

गौरव पाठक
प्रभारी
क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र
लखनऊ

अजय कुमार अग्रवाल
संयुक्त निदेशक
संस्कृति निदेशालय उ०प्र०
लखनऊ

शिशिर
विशेष सचिव एवं निदेशक
सूचना, संस्कृति, भाषा, उत्तर प्रदेश

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

कुम्भ मेला – 2019 : उत्तर प्रदेश की विभिन्न विधाओं की संस्कारशाला
दिनांक : 15 से 30 दिसम्बर, 2018

16 दिवसीय प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला

(स्थान – श्री गुरु तेग बहादुर खालसा इण्टरमीडिएट कालेज, खुल्दाबाद, प्रयागराज)

सुश्री सीमा मोरवाल, मथुरा (प्रशिक्षक)

प्रमाण पत्र

श्री/सुश्री ______________________

ब्रज के लोक गीत, लोक नृत्य की कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

गौरव पाठक
प्रभारी
क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र
लखनऊ

अजय कुमार अग्रवाल
संयुक्त निदेशक
संस्कृति निदेशालय उ०प्र०
लखनऊ

शिशिर
विशेष सचिव एवं निदेशक
सूचना, संस्कृति, भाषा, उत्तर प्रदेश

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

कुम्भ मेला – 2019 : उत्तर प्रदेश की विभिन्न विधाओं की संस्कारशाला
दिनांक : 15 से 30 दिसम्बर, 2018

16 दिवसीय प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला

(स्थान – श्री संगम सिंह सिंगरौर इण्टर कालेज, कदीरपुर, प्रयागराज)

श्री रतीश मोहन, प्रयागराज (प्रशिक्षक)

प्रमाण पत्र

श्री/सुश्री ______________________

नौटंकी की कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

गौरव पाठक
प्रभारी
क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र
लखनऊ

अजय कुमार अग्रवाल
संयुक्त निदेशक
संस्कृति निदेशालय उ०प्र०
लखनऊ

शिशिर
विशेष सचिव एवं निदेशक
सूचना, संस्कृति, भाषा, उत्तर प्रदेश

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

कुम्भ मेला – 2019 : उत्तर प्रदेश की विभिन्न विधाओं की संस्कारशाला
दिनांक : 15 से 30 दिसम्बर, 2018

16 दिवसीय प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला

(स्थान – करमाईन देवी जूनियर हाई स्कूल, करमा, प्रयागराज)

सुश्री नीता जोशी, लखनऊ (प्रशिक्षक)

प्रमाण पत्र

श्री/सुश्री ______________________

कथक की कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

गौरव पाठक
प्रभारी
क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र
लखनऊ

अजय कुमार अग्रवाल
संयुक्त निदेशक
संस्कृति निदेशालय उ०प्र०
लखनऊ

शिशिर
विशेष सचिव एवं निदेशक
सूचना, संस्कृति, भाषा, उत्तर प्रदेश

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

कुम्भ मेला – 2019 : उत्तर प्रदेश की विभिन्न विधाओं की संस्कारशाला
दिनांक : 15 से 30 दिसम्बर, 2018

16 दिवसीय प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला

(स्थान – लेट आर०पी० इण्टर कालेज, नैनी, प्रयागराज)

लोक संस्कृति शोध संस्थान, लखनऊ (प्रशिक्षक)

प्रमाण पत्र

श्री/सुश्री ______________________

जादू, की कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

गौरव पाठक
प्रभारी
क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र
लखनऊ

अजय कुमार अग्रवाल
संयुक्त निदेशक
संस्कृति निदेशालय उ०प्र०
लखनऊ

शिशिर
विशेष सचिव एवं निदेशक
सूचना, संस्कृति, भाषा, उत्तर प्रदेश

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

कुम्भ मेला – 2019 : उत्तर प्रदेश की विभिन्न विधाओं की संस्कारशाला
दिनांक : 15 से 30 दिसम्बर, 2018

16 दिवसीय प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला

(स्थान – बलापुर आदर्श बालिका विद्यालय, बलापुर प्रयागराज)

श्री हरीश कुमार, मथुरा (प्रशिक्षक)

प्रमाण पत्र

श्री/सुश्री ______________________

ब्रज के लोक गीत, लोक नृत्य की कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

गौरव पाठक
प्रभारी
क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र
लखनऊ

अजय कुमार अग्रवाल
संयुक्त निदेशक
संस्कृति निदेशालय उ०प्र०
लखनऊ

शिशिर
विशेष सचिव एवं निदेशक
सूचना, संस्कृति, भाषा, उत्तर प्रदेश

कुंभ में सिखाई हाथ की सफाई

जादूगर सुरेश कुमार और आफताब ने बच्चों को सिखाया जादू, दिखाए हैरतअंगेज करतब

[illegible]

शुरू हुई लोक संगीत की प्रशिक्षण कार्यशाला

उतरांव। संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा कुंभ मेला में विभिन्न विधाओं की कार्यशाला के अंतर्गत पंद्रह दिसम्बर से 30 दिसंबर तक कटहरा हँड़िया में प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला में प्रतिभाग करने वाले छात्रों को चयनित किया गया है। विद्यालय में चयनित समन्वयक लोकभाषा के हास्य कवि धनञ्जय शास्वत ने जानकारी दिया कि इस कुंभ मेला में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विभिन्न विधाओं की प्रस्तुति के लिए जिले भर में आठ विद्यालय चयनित किये है।

कुंभ मेले को भव्य रूप देने के लिए विभिन्न लोकविधाओं की पंद्रह दिनी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र के प्रभारी गौरव पाठक के मुताबिक सात विद्यालयों में कार्यशालाएं संचालित की जा रही हैं। इसके तहत लोकगीत एवं नृत्य, अवधी, नौटंकी, जादू, कठपुतली, पाईं डंडा, कथक आदि विधाएं शामिल हैं।

विलुप्त हो रही लोक कला को जीवंत रखना संस्था का उद्देश्य:कुसुम

सहसों कार्यालय

हंडिया : प्रयागराज। लोक कला जो भारतीय संस्कृति की धरोहर है उसे बचा कर रखना ही हमारी संस्था लोक रंग फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य है, पुरानी गीते व कलाएं जो प्राचीन काल मे भारत भूमि की पहचान हुआ करती थी अब धीरे धीरे आधुनिक युग में विलुप्त हो रहे है, इन्ही प्राचीन कलाओं को जीवंत रखने के लिए प्रयागराज की पावन धरा में होने वाले कुम्भ मेले में विभिन्न मंचो के माध्यम से प्रस्तुति कराई जाएगी। उक्त बातें लोक रंग फाउंडेशन लखनऊ से पधारी कुसुम वर्मा ने शिव इंटर कालेज कटहरा में आयोजित १६ दिवसीय प्रस्तुतिपरक संस्कारशाला में एक भेटवार्ता के दौरान कही। बताते चले की विद्यालय से लगभग ५० छात्र व छात्रायें उक्त कार्यक्रम के माध्यम से अपनी कलाओं के माध्यम से जलवा बिखेरेंगे इस अवसर पर प्रभा सिंह प्रवीण कुमार , अनुराग शुक्ला, प्रशिक्षक विकास इलाहाबादी, समन्वयक धनञ्जय शास्वत सहित अन्य सहयोगी मौजूद रहे। विद्यालय के प्रबंधक ने अपने विद्यार्थियों को बड़े मंचों में प्रस्तुति के लिये ले जाने के लिए संस्था को धन्यवाद ज्ञापित किया।

अब करहुं सकल व्यवहार हरदिया मंगलमय हो

कुंभ मेला के सेक्टर ६ में लोकरंग फाउण्डेशन के बैनर तले आयोजित कार्यक्रम में कलाकारों ने मचाया धमाल

झूंसी : प्रयागराज। कुंभ मेला के सेक्टर ६ में संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश के द्वारा बनाए गए भारद्वाज मंच पर कटहरा हँडिया स्थित शिव इंटर कॉलेज के छात्रों ने लोकरंग फाउंडेशन के बैनर तले लोक कला के माध्यम से लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। बताते चलें कि इस वर्ष उत्तर प्रदेश सरकार देश की विलुप्त हो रही तमाम कलाओं को संजोए रखने के लिए कुंभ मेला क्षेत्र में विभिन्न मंचों के माध्यम से जनपद के लगभग आधा दर्जन से अधिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षित करके मंचो के माध्यम से दर्शाया गया। लोक कला की प्रस्तुति के लिए शिव इंटर कॉलेज कटहरा के विद्यार्थियों ने मंगलवार को चले कार्यक्रम मे प्रस्तुतियों की श्रृंखला में सर्वप्रथम गंगा गीत को बड़े ही मनोहारी तरीके से प्रस्तुत किया। लोक गीत, कजरी व कहरवा के तर्ज पर प्रस्तुत कार्यक्रम मे कर्णप्रिय गीत लोगों को लुभा लिए। छात्राओं ने रस्म गीतों में मेहंदी गीत, शहजादी के गोरे-गोरे हाथ मेहंदी खूब सजे व हल्दी रस्म के गीत अब करहु सकल व्यवहार हरदिया मंगलमय हो गाया तो समूचा पण्डाल वैवाहिक आयोजन स्थल जैसा लगने लगा। उपस्थित श्रोताओं ने मुक्तकंठ से कलाकारों की प्रशंसा करते हुए करतल ध्वनि से स्वागत किया। समापन होली गीत व लोक नृत्य के पश्चात् हुआ। संस्कृति विभाग के प्रदेश प्रभारी गौरव पाठक ने प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र व मेडल देकर सम्मानित करते हुये उज्ज्वल भविष्य की कामना किया। इस मौके पर लोकरंग फाउंडेशन की निर्देशिका कुसुम वर्मा, विद्यालय के प्रधानाचार्य सुयोग पांडेय, प्रशिक्षक विकास इलाहाबादी, वेदानंद वेद, अनूप शुक्ला, प्रभात सिंह सहित भारी संख्या में लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन समन्वयक व हास्य कवि धनंजय वल्लभ द्विवेदी ने किया।

संस्कार कार्यशाला मे प्रतिभाग करने वाले छात्र चयनित

हण्डिया: प्रयागराज। सांस्कृतिक मंत्रालय भारत सरकार द्वारा कुम्भ मेला के दौरान विभिन्न विधाओं पर अपनी प्रस्तुति देने वाले छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षित करने के लिए १५ दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हण्डिया के कटहरा स्थित शिव इंटरमीडिएट कॉलेज मे किया गया है। उक्त आशय की जानकारी देते हुए हांस्य कवि धनंज्जय शाश्वत ने बताया कि प्रस्तुति परक संस्कारशाला मे प्रतिभाग करने के लिए जनपद के आठ विद्यालयों के बच्चों को चयनित किया गया है। चयनित छात्रों को कुम्भ मेला मे प्रस्तुति देने के लिए लोक भाषा लोकगीत व नृत्य का प्रशिक्षण पारंपरिक एवं लोक गीतकार विकास इलाहाबादी द्वारा दी जा रही है।

गाँवों में छुपी प्रतिभा को निखार कर बड़े मंचो तक ले जाना ही हमारा मुख्य उद्देश्य- गौरव

सहसों कार्यालय

सहसों: प्रयागराज। ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों में हुनर तो होता है लेकिन आगे बढ़ने के लिए इनको समुचित व्यवस्था नहीं मिल पाती है। जिस कारण से वह अपने अंदर छिपी प्रतिभा को प्रदर्शित करने से वंचित रह जाते है। उनके अंदर की प्रतिभा को उकेर कर बड़े मंचो तक पहुंचाना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है। उक्त बातें संस्कृति विभाग के कुम्भ मेला में प्रस्तुति हेतु लोक रंग फाउंडेशन लखनऊ के प्रभारी गौरव पाठक ने शिव इंटरमीडिएट कॉलेज कटहरा के चयनित छात्रों को संबोधित करते हुए कहा। श्री पाठक ने आगे कहा कि हमारी संस्था का मुख्य उद्देश्य अवध क्षेत्र की लोक कला को संजो कर रखना है। इस मौके पर संगीत प्रशिक्षक विकास इलाहाबादी, समन्वयक धनञ्जय शास्वत, वेदानंद वेद, अतुल त्रिपाठी सहित तमाम लोग उपस्थित रहे। विद्यालय के प्रधानाचार्य सुयोग त्रिपाठी ने उपस्थित लोगों का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यशालाओं का शुभारम्भ

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज । कुम्भ 2019 के अवसर पर बालक-बालिकाओं ने संस्कृति के सम्वर्धन के उद्देश्य से 15 दिसम्बर 2018 से प्रयागराज के विभिन्न विद्यालयों में उत्तर प्रदेश की विभिन्न विधाओं जैसे-जादू, कथक, लोक संगीत आदि का शुभारम्भ किया गया लोक संस्कृति शोध संस्थान द्वारा लेट आर0 पी0 इण्टर कालेज नैनी में जादू की कार्यशाला एवं करमा में कथक की कार्यशाला करमाइन देवी जू0 हा0 स्कूल में पधारे ।

समस्त कार्यशालाओं की प्रस्तुति

स्थल : भारद्वाज मंच, सेक्टर–6 नागबासु मंदिर के पास, प्रयागराज